



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्रसाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 495] मई विल्ली, सोमवार, दिसम्बर 15, 1975/अग्रहायण 24, 1897  
No. 495] NEW DELHI, MONDAY, DECEMBER 15, 1975/AGRAHAYANA 24, 1897

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed  
as a separate compilation

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue and Insurance)

NOTIFICATION

New Delhi, the 15th December 1975

**S.O. 707 (E).**—In exercise of the powers conferred by clause (c) of section 26 and section 114 of the Gold (Control) Act, 1968 (45 of 1968), the Central Government hereby makes the following rules, namely:—

**1. Short title and commencement.**—(1) These rules may be called the Gold Control (Disposal of Gold Recovered from Refining or Melting of Silver) Rules, 1975.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

**2. Sale of gold.**—The gold, if any, recovered from refining or melting of silver as referred to in section 26 of the Gold (Control) Act, 1968 (45 of 1968) may be sold to an industry engaged in the production of, or carrying on the trade in, any of the following, namely:—

- (a) Jari.
- (b) Liquid gold.
- (c) Gold-plating of fountain pen nibs and ancillaries.
- (d) Gold-plating of watch cases and parts.

- (e) Gilded glass beads.
- (f) Gold-plating of optical frames and parts thereof.
- (g) Ayurvedic, Unani and Sidha medicines.

[No. 20/75-F. 131/3/75-GC.II]

M. G. ABROL, Addl. Secy.

**वित्त मंत्रालय****(राजस्व और बीमा विभाग)****अधिसूचना**

नई दिल्ली, 15 दिसम्बर, 1975

का० आ० 707(अ).—केन्द्रीय सरकार, स्वर्ण (नियंत्रण) अधिनियम, 1968 (1968 का 45) की धारा 26 के खण्ड (ग) और धारा 114 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1 **संक्षिप्त नाम और आरम्भ.**—(1) इन नियमों का नाम स्वर्ण नियंत्रण (चांदी के परिष्करण अथवा गलाने से प्राप्त स्वर्ण का व्ययन) नियम, 1975 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. **स्वर्ण का विषय.**—स्वर्ण (नियंत्रण) अधिनियम, 1968 (1968 का 45) की धारा 26 में यथानिर्दिष्ट, चांदी के परिष्करण या गलाने से प्राप्त स्वर्ण, यदि कोई हो, निम्नलिखित के उत्पादन या कारखान में लगे किसी उद्योग को बेचा जा सकता है, अर्थात् :—

(क) जरी।

(ख) द्रव स्वर्ण।

(ग) फाउन्टेन पेन की निबों तथा समतुल्य वस्तुओं पर सोने का पानी चढ़ाना।

(घ) घड़ियों के खोल और घुड़ों पर सोने का पानी चढ़ाना।

(ङ) सोने के पानी चढ़े कांच के मनके।

(च) चश्मे के फ्रेम और उनके पाटों पर सोने का पानी चढ़ाना।

(छ) आयुर्वेदिक, यूनानी और सिद्ध औषधियां।

[सं० 20 / 75 फा० 131/3/75-स्व० नि० II]

एम० जी० अब्रोल, अतिरिक्त सचिव।